Department of Anthropology
R.L.S.Y. College, Kokar
Ranchi
Faculty :- Dr. Dinesh Kumar

Brief of chapter (family)

Paper - C 1
UNIT - IV

TOPIC :- family

Definition of the family -

Maciver & Page :- "The family is a group of a sex relationship sufficiently precise and enduring to provide for the procreation and upbringing of children".

- General characteristics of family :-
- Distinctive features of family :-
- Theories on the origin of family :-
  - a) Classical Theory
  - b) Theory of Sex Communism
  - c) Evolutionary Theory
  - d) Theory of Monogamy
  - e) Theory of Matriarchy.
- Different types of family :-
  - a) Nuclear family.
  - b) Conjugal family.
  - c) Joint family.
  - d) Extended family.
- Functions of family.
- Some Examples of Tribal families.
  - a) Patrilineal family - ex- Kharia tribe
  - b) Matrilineal family - ex- Khasi tribe

College - RLSY College
Dept - Anthropology
Faculty - Dr. Ranju Kumari
(Asst Professor)

Topic - मानवशास्त्र क्या है
(Core - 1, unit 1)

Introduction of "Anthropology"

मानवशास्त्र को अंग्रेजी में "Anthropology" कहा जाता है जो ग्रीक भाषा के शब्दों से मिलकर बना है।

Anthropology — Anthropos + Logos

मानवविज्ञान — मानव, विज्ञान

ie- मानवशास्त्र मानव का वैज्ञानिक पद्धति से अध्ययन करता है।

"Herskovits" के अनुसार - मानवशास्त्र मानव एवं उसके क्रिया कलापों का अध्ययन करता है" (The study of Man & His work.)

Clyde Kluckhohn - ने मानवशास्त्र को "मनुष्य का दर्पण" कहा।

Hoebel - "मानवशास्त्र मानव और उसके समस्त कार्यों का अध्ययन है।

मानवशास्त्र में मानव के सामाजिक सांस्कृतिक पक्ष के साथ साथ उसके शारीरिक पक्ष का भी अध्ययन किया जाता है।

मानवविज्ञान

- मानव का अध्ययन → शारीरिक मानव विज्ञान
- मानव के कृत्य का अध्ययन → सांस्कृतिक मानव विज्ञान

Dr. Ranju Kumari (Dept. of Anthropology)
RLSY College Ranchi)

core - 1, unit 1

Topic → मानवशास्त्र की विभिन्न शाखाएं

मानवविज्ञान की मुख्य शाखाएं निम्नलिखित है ?

1. शारीरिक मानवविज्ञान (Physical Anthropology)
2. प्रागैतिहासिक मानवविज्ञान (Prehistoric/Archaeology)
3. सामाजिक-सांस्कृतिक मानवविज्ञान (Social-cultural Anthropology)
4. भाषायी मानवविज्ञान - (Linguistics Anthropology)
5. व्यवहारिक या क्रियाशील मानवविज्ञान - Applied & Action Anthropology

1. शारीरिक मानवविज्ञान - इस शाखा के अन्तर्गत मानव की शारीरिक उत्पत्ति-उद्विकास, शारीरिक विभिन्नताएं इत्यादि का अध्ययन किया जाता है पूर्व के मानव से अबतक के मानव में आये शारीरिक बदलाव का अध्ययन किया जाता है।

2. प्रागैतिहासिक मानवविज्ञान - इस शाखा के अन्तर्गत मानव के उस काल की संस्कृति का अध्ययन किया जाता है जिसका कोई लिखित प्रमाण उपलब्ध नहीं है। जीवाश्मों तथा अवशेषों पर आधारित अध्ययन किया जाता है।

3. सामाजिक सांस्कृतिक मानवविज्ञान - इस शाखा के अन्तर्गत जीवित समसामयिक संस्कृति का अध्ययन किया जाता है। मानव के सभी सामाजिक पहलु - सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, आर्थिक, इत्यादि पहलू की चर्चा का अध्ययन करता है।

4. भाषायी मानवशास्त्र - भाषायी मानवविज्ञान भाषा की उत्पत्ति, विकास एवं उसके व्याकरणिक संरचना का अध्ययन करता है।

5. व्यवहारिक या क्रियाशील मानवविज्ञान - किसी विशेष संस्कृति में विद्यमान व्यवहारिक समस्याओं के समाधान के लिए समय समय योजनाएं

dr. Ranju Kumari (Dept of Anthropology)
(RLSY College Ranchi)

SEM I → core - 2 unit - II

Topic - SAMPLING

क्षेत्रीय अनुसंधान में मुख्यतः दो पद्धतियाँ उपयोग होता है -

(1) जनगणना पद्धति
(2) निदर्शन पद्धति -

जनगणना पद्धति में किसी सम्पूर्ण जनसंख्या अध्ययन विषय के समस्त इकाईयों का अध्ययन किया जाता है जबकि निदर्शन वह पद्धति है जिसमें सम्पूर्ण जनसंख्या अथवा समस्त इकाईयों का अध्ययन न कर समग्र में से कुछ इकाईयों का अध्ययन किया जाता है जो समस्त का प्रतिनिधित्व करता है |

✓ गुडे एवं हाट के अनुसार "निदर्शन एक विस्तृत समूह की अपेक्षाकृत छोटा समूह होता है"

Types of sampling

1. दैव निदर्शन पद्धति (Random sampling Method)
2. उद्देश्यपूर्ण निदर्शन प्रणाली (Purposive sampling)

Sub Types of Random sampling Method)

a. लॉटरी प्रणाली - Lottery Method
b. कार्ड प्रणाली Card Method
c. नियमित अंकन प्रणाली - Regular Marking Method
d. अनियमित अंकन प्रणाली - Irregular Marking Method
e. टिप्पेट प्रणाली - Tippet Method
(f) ग्रिड प्रणाली - Grid Method

Dr. Ranju Kumari (Dept Anthropology)
(RLSY college Ranchi)

SEMESTER – II

core – 3 – unit – I

TOPIC – BIOLOGICAL ANTHROPOLOGY ?

Introduction

Biological Anthropology – मानवविज्ञान का यह अंग मानव के उद्विकास, उसकी शारीरिक संरचना, उसकी प्रकृति तथा विभिन्न मानव समूहों की भिन्नताओं का वैज्ञानिक अध्ययन करता है।

Hoebel के अनुसार "शारीरिक मानवविज्ञान मानव की शारीरिक विशेषताओं का अध्ययन है।"

विश्व में सर्वप्रथम जब मानव का उद्भव हुआ तो उसका स्वरूप कैसा था, विभिन्न स्थानों के मानवों में क्या अंतर है, उनमें ये भिन्नतायें किन कारणों से हुआ, वंशानुक्रमण का प्रभाव मानव पर किस प्रकार पड़ता है, इन समस्त तथ्यों का अध्ययन शारीरिक मानव विज्ञान में किया जाता है।

Scope of Physical Anthropology

1. शारीरिक मानवविज्ञान का लक्ष्य, मानव के शरीर से संबंधित तथ्यों का ठीक ठीक वर्णन करना
2. तथ्यों से सम्बन्धित घटनाओं का उचित विश्लेषण एवं वर्गीकरण के माध्यम से सामान्य परिणाम निकालना
3. परिवर्तन और प्रक्रियाओं के कारणों तथा दिशाओं को निश्चित करना
4. भविष्य में होने वाले परिवर्तनों की ओर संकेत करना

इस विज्ञान के अन्तर्गत मानव पशु से धीरे धीरे मेधावी मानव में किस प्रकार विकसित हुआ। इस क्रम में उसके शारीरिक रचना में कौन कौन से परिवर्तन हुए इत्यादि का अध्ययन किया जाता है।